वैदिक विज्ञान की ओर

17

जहाँ तक मेरा मत है, असत्य को संसार का कोई भी सम्प्रदाय उचित नहीं मानता, परन्तु उस सम्प्रदाय के अनुयायी अपने सम्प्रदाय के प्रचार हेतु नाना मिथ्या कल्पनाओं व परम्परा का निर्वहन करते हैं। वे अपने सम्प्रदाय की मिथ्या धारणाओं तथा अन्य मत की सत्य-धारणाओं को स्वीकार करने के लिए कभी तैयार नहीं होते। इन सम्प्रदायों के प्रचारक व आचार्य नाना मिथ्या आडम्बरों को अपने सम्प्रदाय का अनिवार्य अंग मान लेते हैं, जिसके प्रति वे अत्यन्त संवेदनशील हो उठते हैं। वे अपने मजहबी ग्रन्थ के एक पन्ने को यदि कहीं भूमि पर पड़ा देख भी लें, तो संसार में आग लगाने को तैयार हो जाते हैं। कहीं रंगों का विवाद, कहीं ध्वज का विवाद आदि अनेकों संवेदनशील कारण इस संसार में अशान्ति व आतंक फैलाने व खूनी ताण्डव के कारण बन रहे हैं। आज कट्टरपंथी मुस्लिमों का वश चले, तो वे उगते सूर्य व अग्नि को भी हरे रंग में रंग दें और इसी प्रकार यदि किसी अति कट्टरपंथी हिन्दू का सामर्थ्य हो, तो पृथ्वी की सम्पूर्ण वनस्पति को भगवे रंग में रंग दे। असहिष्णुता तेजी से बढ़ रही है। एक दूसरे की परम्पराओं को नीचा दिखाने का प्रयास हो रहा है। इसको ही धार्मिक दृढ़ता कहा जा रहा है। ये महानुभाव अपने-२ इष्ट की पूजा के लिए नानाविध कष्ट उठाते हैं। कोई सैकड़ों किमी पैदल, तो कोई लेट-लेटकर पदयात्रा करते हैं, कोई रमजान के महीने में भूख-प्यास को सहते हैं, कोई नवरात्राओं में भूख को सहन करते हैं, कोई अपनी पीठ पर बम बांधकर अपनी व दूसरों की मृत्यु के आह्वान को तैयार रहते हैं। अहो! कैसा त्याग, समर्पण व निर्भीकता होती है, इनके जीवन में। निश्चित ही ऐसे कट्टरपंथियों की दृढ़ता व अपने मत के प्रति आस्था श्लाघनीय है, इसके लिए उनका त्याग प्रशंसनीय है।

मेरे मित्रो! इतना सब होते हुए भी जरा इस बिन्दु पर विचार करें कि इस समर्पण व त्याग से संसार में कौन किसका कल्याण कर रहा है? स्वयं भी दुःखी होना व दूसरों को भी दुःख देना भला कैसा धर्म है? यह आस्था किस काम की? काश! इतनी आस्था अथवा त्याग, तप सत्य के लिए हो जाते, तो सम्पूर्ण मानव जाति सत्य के सूत्र में बंधकर एकत्व का मिलकर आनन्द भोगती। तब जाति, सम्प्रदाय, भाषा व क्षेत्रों के विवाद नहीं होते। परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है। सत्य, ईमानदारी, न्याय पर ओजस्वी भाषण देने वाले स्वयं मिथ्या, पक्षपात व बेईमानी का बीज बो रहे हैं। स्मरण रहे कि सत्य कभी किसी को लड़ाता नहीं, जबकि मिथ्या केवल लड़ाने का ही कार्य करता है।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक